

रविवार 29 मार्च, 2026

विषय — वास्तविकता

स्वर्ण पाठ: यशायाह 30 : 21

"और जब कभी तुम दाहिनी वा बाईं ओर मुड़ने लगे, तब तुम्हारे पीछे से यह वचन तुम्हारे कानों में पड़ेगा, मार्ग यही है, इसी पर चलो।"

उत्तरदायी अध्ययन: यशायाह 45 : 5, 6, 8, 9, 12, 19, 22

- 5 मैं यहोवा हूँ और दूसरा कोई नहीं, मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं; यद्यपि तू मुझे नहीं जानता, तौभी मैं तेरी कमर कसूंगा,
- 6 जिस से उदयाचल से ले कर अस्ताचल तक लोग जान लें कि मुझ बिना कोई है ही नहीं है।
- 8 हे आकाश, ऊपर से धर्म बरसा, आकाशमण्डल से धर्म की वर्षा हो; पृथ्वी खुले कि उद्धार उत्पन्न हो; और धर्म भी उसके संग उगाए; मैं यहोवा ही ने उसे उत्पन्न किया है॥
- 9 हाय उस पर जो अपने रचने वाले से झगड़ता है! वह तो मिट्टी के ठीकरों में से एक ठीकरा ही है! क्या मिट्टी कुम्हार से कहेगी, तू यह क्या करता है? क्या कारीगर का बनाया हुआ कार्य उसके विषय कहेगा कि उसके हाथ नहीं है?
- 12 मैं ही ने पृथ्वी को बनाया और उसके ऊपर मनुष्यों को सृजा है; मैं ने अपने ही हाथों से आकाश को ताना और उसके सारे गणों को आज्ञा दी है।
- 19 मैं ने न किसी गुप्त स्थान में, न अन्धकार देश के किसी स्थान में बातें कीं; मैं ने याकूब के वंश से नहीं कहा, मुझे व्यर्थ में ढूँढ़ो। मैं यहोवा सत्य ही कहता हूँ, मैं उचित बातें ही बताता आया हूँ॥
- 22 हे पृथ्वी के दूर दूर के देश के रहने वालो, तुम मेरी ओर फिरो और उद्धार पाओ! क्योंकि मैं ही ईश्वर हूँ और दूसरा कोई नहीं है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यूहन्ना 3 : 16

- 16 क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।

2. मत्ती 14 : 14-22 (से 2nd), 23-33

- 14 उस ने निकलकर बड़ी भीड़ देखी; और उन पर तरस खाया; और उस ने उन के बीमारों को चंगा किया।

- 15 जब सांझ हुई, तो उसके चेलों ने उसके पास आकर कहा; यह तो सुनसान जगह है और देर हो रही है, लोगों को विदा किया जाए कि वे बस्तियों में जाकर अपने लिये भोजन मोल लें।
- 16 यीशु ने उन से कहा उन का जाना आवश्यक नहीं! तुम ही इन्हें खाने को दो।
- 17 उन्होंने उस से कहा; यहां हमारे पास पांच रोटी और दो मछलियों को छोड़ और कुछ नहीं है।
- 18 उस ने कहा, उन को यहां मेरे पास ले आओ।
- 19 तब उस ने लोगों को घास पर बैठने को कहा, और उन पांच रोटियों और दो मछलियों को लिया; और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया और रोटियां तोड़ तोड़कर चेलों को दीं, और चेलों ने लोगों को।
- 20 और सब खाकर तृप्त हो गए, और उन्होंने बचे हुए टुकड़ों से भरी हुई बारह टोकरियां उठाईं।
- 21 और खाने वाले स्त्रियों और बालकों को छोड़कर पांच हजार पुरूषों के अटकल थे॥
- 22 और उस ने तुरन्त अपने चेलों को बरबस नाव पर चढ़ाया, कि वे उस से पहिले पार चले जाएं, जब तक कि वह लोगों को विदा करे।
- 23 वह लोगों को विदा करके, प्रार्थना करने को अलग पहाड़ पर चढ़ गया; और सांझ को वहां अकेला था।
- 24 उस समय नाव झील के बीच लहरों से डगमगा रही थी, क्योंकि हवा साम्हने की थी।
- 25 और वह रात के चौथे पहर झील पर चलते हुए उन के पास आया।
- 26 चले उस को झील पर चलते हुए देखकर घबरा गए! और कहने लगे, वह भूत है; और डर के मारे चिल्ला उठे।
- 27 यीशु ने तुरन्त उन से बातें की, और कहा; ढाढ़स बान्धो; मैं हूं; डरो मत।
- 28 पतरस ने उस को उत्तर दिया, हे प्रभु, यदि तू ही है, तो मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने की आज्ञा दे।
- 29 उस ने कहा, आ: तब पतरस नाव पर से उतरकर यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा।
- 30 पर हवा को देखकर डर गया, और जब डूबने लगा, तो चिल्लाकर कहा; हे प्रभु, मुझे बचा।
- 31 यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया, और उस से कहा, हे अल्प-विश्वासी, तू ने क्यों सन्देह किया?
- 32 जब वे नाव पर चढ़ गए, तो हवा थम गई।
- 33 इस पर जो नाव पर थे, उन्होंने उसे दण्डवत करके कहा; सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है॥

3. मरकुस 10 : 1 (और यह), 13-18, 21-23 (से 2nd), 25-27, 32 (से :), 33 (से 4th), 34, 46-49 (से 1st), 51, 52

- 1 ... और भीड़ उसके पास फिर इकट्ठी हो गई, और वह अपनी रीति के अनुसार उन्हें फिर उपदेश देने लगा।
- 13 फिर लोग बालकों को उसके पास लाने लगे, कि वह उन पर हाथ रखे, पर चेलों ने उन को डांटा।
- 14 शु ने यह देख क्रुध होकर उन से कहा, बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है।
- 15 मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक की नाई ग्रहण न करे, वह उस में कभी प्रवेश करने न पाएगा।
- 16 और उस ने उन्हें गोद में लिया, और उन पर हाथ रखकर उन्हें आशीष दी॥
- 17 और जब वह निकलकर मार्ग में जाता था, तो एक मनुष्य उसके पास दौड़ता हुआ आया, और उसके आगे घुटने टेककर उस से पूछा हे उत्तम गुरू, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूं?

- 18 यीशु ने उस से कहा, तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक अर्थात् परमेश्वर।
- 21 यीशु ने उस पर दृष्टि करके उस से प्रेम किया, और उस से कहा, तुझ में एक बात की घटी है; जा, जो कुछ तेरा है, उसे बेच कर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले।
- 22 इस बात से उसके चेहरे पर उदासी छा गई, और वह शोक करता हुआ चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था।
- 23 यीशु ने चारों ओर देखकर अपने चेलों से कहा, धनवानों को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है!
- 25 परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है!
- 26 वे बहुत ही चकित होकर आपस में कहने लगे तो फिर किस का उद्धार हो सकता है?
- 27 यीशु ने उन की ओर देखकर कहा, मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से हो सकता है; क्योंकि परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।
- 32 और वे यरूशलेम को जाते हुए मार्ग में थे, और यीशु उन के आगे आगे जा रहा था:
- 33 कि देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं, और मनुष्य का पुत्र महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा, और वे उस को घात के योग्य ठहराएंगे।
- 34 और वे उस को ठड्डों में उड़ाएंगे, और उस पर थूकेंगे, और उसे कोड़े मारेंगे, और उसे घात करेंगे, और तीन दिन के बाद वह जी उठेगा॥
- 46 और जब वह और उसके चले, और एक बड़ी भीड़ यरीहो से निकलती थी, तो तिमाई का पुत्र बरतिमाई एक अन्धा भिखारी सड़क के किनारे बैठा था।
- 47 वह यह सुनकर कि यीशु नासरी है, पुकार पुकार कर कहने लगा; कि हे दाऊद की सन्तान, यीशु मुझ पर दया कर।
- 48 बहुतों ने उसे डांटा कि चुप रहे, पर वह और भी पुकारने लगा, कि हे दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर।
- 49 तब यीशु ने ठहरकर कहा, उसे बुलाओ; और लोगों ने उस अन्धे को बुलाकर उस से कहा, ढाढ़स बान्ध, उठ, वह तुझे बुलाता है।
- 51 इस पर यीशु ने उस से कहा; तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं? अन्धे ने उस से कहा, हे रब्बी, यह कि मैं देखने लगूं।
- 52 यीशु ने उस से कहा; चला जा, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है: और वह तुरन्त देखने लगा, और मार्ग में उसके पीछे हो लिया॥

4. मत्ती 6 : 9, 10, 13

- 9 सो तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो; "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए।
- 10 तेरा राज्य आए; तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।
- 13 और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा; क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं।
आमीन।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 335: 27-31

स्तविकता आध्यात्मिक, सामंजस्यपूर्ण, अपरिवर्तनीय, अमर, दिव्य, शाश्वत है। कुछ भी अनपेक्षित वास्तविक, सामंजस्यपूर्ण या शाश्वत नहीं हो सकता। पाप, बीमारी और मृत्यु दर आत्मा के दमन विरोधी हैं, और वास्तविकता के विरोधाभास होने चाहिए।

2. 505: 16-28

आत्मा उस समझ को प्रदान करती है जो चेतना को बढ़ाती है और सभी सत्य की ओर ले जाती है। भजनहार कहता है: "महासागर के शब्द से, और समुद्र की महातरंगों से, विराजमान यहोवा अधिक महान है॥" आध्यात्मिक भावना आध्यात्मिक अच्छाई की समझ है। समझ वास्तविक और असत्य के बीच सीमांकन की रेखा है। आध्यात्मिक समझ मन, जीवन, सत्य और प्रेम को प्रकट करती है, — और क्रिश्चियन साइंस में ब्रह्मांड का आध्यात्मिक प्रमाण देते हुए, दिव्य भावना को प्रदर्शित करता है।

यह समझ बौद्धिक नहीं है, विद्वानों की प्राप्ति का परिणाम नहीं है; यह प्रकाश में लाई गई सभी चीजों की वास्तविकता है।

3. 89: 20-21

आत्मा, ईश्वर, तब सुनाई देता है जब इंद्रियाँ चुप हो जाती हैं।

4. 333: 16 (वह)-23

नासरत के यीशु के आगमन ने ईसाई युग की पहली शताब्दी को चिह्नित किया, लेकिन मसीह वर्षों या दिनों की शुरुआत के बिना है। ईसाई युग से पहले और बाद में सभी पीढ़ियों के दौरान, आध्यात्मिक विचार के रूप में, मसीह, - भगवान का प्रतिबिंब, - शक्ति और अनुग्रह के कुछ उपाय के साथ आया है जो सभी मसीह, सत्य को प्राप्त करने के लिए तैयार हैं।

5. 133: 24-28

कि उसने "खुद को भगवान के बराबर बनाया", उसके खिलाफ यहूदी आरोपों में से एक था जिसने आत्मा की नींव पर ईसाई धर्म को लगाया, जिसने सिखाया कि वह पिता से प्रेरित था और भगवान के बाहर कोई जीवन, बुद्धि, और न ही पदार्थ को पहचानता था।

6. 206: 15-18

मनुष्य के साथ भगवान के वैज्ञानिक संबंध में, हम पाते हैं कि जो कुछ भी एक को आशीर्वाद देता है, वह सभी को आशीर्वाद देता है, जैसा कि यीशु ने आत्मा को दिखाया, भौतिक नहीं, आपूर्ति का स्रोत होने के नाते, रोटियों और मछलियों के साथ।

7. 236: 28-10

यीशु छोटे बच्चों को गलत से आज़ादी और सही के प्रति ग्रहणशीलता के कारण प्यार करते थे। जबकि उम्र दो मर्तों के बीच रुक रही है या झूठी मान्यताओं से जूझ रही है, युवा सत्य की ओर आसान और तेजी से कदम बढ़ाता है।

एक छोटी लड़की, जो कभी-कभार मेरी बातें सुनती थी, ने अपनी उंगली को बुरी तरह जख्मी कर लिया। ऐसा लग रहा था कि उसने इसे नोटिस नहीं किया। इसके बारे में पूछे जाने पर उसने सरलता से उत्तर दिया, "सामग्री में कोई सनसनी नहीं है।" हंसती निगाहों से बंधते हुए, उसने वर्तमान में कहा, "मम्मा, मेरी उंगली थोड़ी खराब नहीं है।"

हो सकता है कि उसके माता-पिता ने अपनी नशीली दवाओं को छोड़ दिया होगा, या उनकी छोटी बेटी ने इतनी स्वाभाविक रूप से प्राप्त मानसिक ऊंचाई तक पहुंचने में महीनों या वर्षों का समय लगाया होगा।

8. 381: 8-19, 27-4

कुछ कथित कानून का उल्लंघन करते समय, आप कहते हैं कि खतरा है। यह डर खतरा है और शारीरिक प्रभावों को प्रेरित करता है। हम वास्तव में एक नैतिक या आध्यात्मिक कानून को छोड़कर कुछ भी तोड़ने से पीड़ित नहीं हो सकते। नश्वर विश्वास के तथाकथित नियम आत्मा को अमर होने की समझ से नष्ट हो जाते हैं, और वह नश्वर मन समय, काल, और प्रकार के रोग का विधान नहीं कर सकता, जिसके साथ नश्वर मर जाते हैं। परमेश्वर कानूनविद् है, लेकिन वह भयंकर संहिताओं का लेखक नहीं है। अनंत जीवन और प्रेम में कोई बीमारी, पाप, मृत्यु नहीं है, और शास्त्र घोषणा करते हैं कि हम अनंत भगवान में रहते हैं, चलते हैं, और हमारे पास हैं।

आइए हम बीमारी को एक निषिद्ध के रूप में दूर करें, और शाश्वत सद्भाव के नियम का पालन करें, - भगवान के कानून के रूप में। एक अन्यायपूर्ण वाक्य को रद्द करना मनुष्य का नैतिक अधिकार है, एक ऐसा वाक्य जो ईश्वरीय अधिकार द्वारा कभी नहीं दिया गया।

क्राइस्ट जीसस ने उस त्रुटि को खारिज कर दिया जो स्वास्थ्य के भौतिक नियमों के उल्लंघन के लिए दंड लगाएगी; उन्होंने पदार्थ के कथित नियमों को रद्द कर दिया, आत्मा के सामंजस्य के विपरीत, दैवीय अधिकार की कमी और उनकी मंजूरी के लिए केवल मानवीय स्वीकृति।

9. 369: 5-13

जिस अनुपात में मनुष्य को सभी वस्तुएं मनुष्य के रूप में खो देती हैं, उसी अनुपात में मनुष्य इसका स्वामी बन जाता है। वह तथ्यों की एक दिव्य भावना में प्रवेश करता है, और यीशु के धर्मशास्त्र को समझने के रूप में बीमारों को ठीक करने, मृतकों को ऊपर उठाने और लहर पर चलने के रूप में प्रदर्शित करता है। इन सभी कर्मों से यीशु का विश्वास इस बात पर है कि सामग्री भौतिक है, यह विश्वास है कि यह जीवन का मध्यस्थ या अस्तित्व के किसी भी रूप का निर्माणकर्ता हो सकता है।

10. 289: 14-20

यह तथ्य कि क्राइस्ट या सत्य, मृत्यु पर काबू पा लेता है और "आतंकियों का राजा" साबित हो जाता है, लेकिन एक नश्वर विश्वास, या त्रुटि, जिसे सत्य जीवन के आध्यात्मिक प्रमाणों से नष्ट कर देता है; और इससे पता चलता है कि मृत्यु के प्रति इंद्रियों को जो दिखाई देता है वह वास्तविक मनुष्य और वास्तविक ब्रह्मांड के लिए एक नश्वर भ्रम है, लेकिन मृत्यु-प्रक्रिया नहीं है।

11. 241: 31-1

"ऊंट का सुई के नाके में से निकल जाना सहज है" पापपूर्ण विश्वासों के लिए स्वर्ग और शाश्वत सद्भाव के राज्य में प्रवेश करने के लिए।

12. 231: 20-29

अपने आप को पाप से श्रेष्ठ बनाने के लिए, क्योंकि परमेश्वर ने आपको इससे श्रेष्ठ बनाया है और मनुष्य को नियंत्रित करता है, सच्चा ज्ञान है। पाप से डरने के लिए प्रेम की शक्ति और ईश्वर के मनुष्य के संबंध में होने के दिव्य विज्ञान को गलत समझना है, - अपनी सरकार पर संदेह करना और उसकी सर्वशक्तिमान देखभाल पर अविश्वास करना। अपने आप को बीमारी और मौत से बेहतर पकड़ना भी उतना ही बुद्धिमानी है, और ईश्वरीय विज्ञान के अनुसार है। उनसे डरना असंभव है, जब आप भगवान को पूरी तरह से समझ लेते हैं और जानते हैं कि वे उनकी रचना का हिस्सा नहीं हैं।

13. 468: 9 (वहाँ)-15

पदार्थ में कोई जीवन, सत्य, बुद्धिमत्ता नहीं है, न ही पदार्थ। सब अनंत मन और उसकी अनंत अभिव्यक्ति है, भगवान के लिए सभी में है। आत्मा अमर सत्य है; मामला नश्वर त्रुटि है। आत्मा ही वास्तविक और शाश्वत है; पदार्थ असत्य और लौकिक है। आत्मा ईश्वर है, और मनुष्य उसकी छवि और समानता है। इसलिए आदमी भौतिक नहीं है; वह आध्यात्मिक है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्विणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6